ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

Volume 11, Issue 2, March 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

IMPACT FACTOR: 7.583

| www.ijarasem.com | ijarasem@gmail.com | +91-9940572462 |

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 2, March 2024 |

कावेरी के उपन्यास 'मिस रमिया' में दलित स्त्री चेतना

विनय कुमार

विभाग हिन्दी, लाल बहादुर शास्त्री स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुगलसराय, चंदौली, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

भाषा, बोध और संवेदना किसी भी समाज के साहित्य में मूल तत्व होते हैं। इन्हीं तत्वों के आलोक में व्यक्ति लोक संस्कृति के तत्वों को संरक्षित करता है। और उन्हीं के सटीक व्याख्या को कथा रूप देता है। भारतीय साहित्य में उपन्यास का आगमन पाश्चात्य साहित्य से हुआ है। लेकिन दलित चेतना के लोकवृत में कथा, कहानी का इतिहास मौखिक रूप से बहुत पुराना है।

पाश्चात्य विद्वान अर्नेस्ट ए. बेकर ने 'उपन्यास की परिभाषा देते हुए उसे गद्यबद्ध कथानक के माध्यम द्वारा जीवन तथा समाज की व्याख्या का सर्वोत्तम साधन माना है।' हिन्दी दलित साहित्य में जयप्रकाश कर्दम के उपन्यास 'छप्पर' को प्रथक उपन्यास माना गया है। लेकिन उनसे पहले देवी दयाल सेन की 'मानव की परख' और दंगली प्रसाद वरुण का 'अमर ज्योति' प्रकाशित हो चुका थी। उसके बाद मोहनदास नैमिसराय, डा. धर्मवीर, अजय नावरिया, रत्न कुमार सांभरिया, सुशीला टाकभौरे आदि लोगों ने दलित वैचारिकता के आधार पर उपन्यास लिखा है। जिसमें कावेरी का उपन्यास 'मिस रमिया' स्त्री चेतना की मिशाल है। इसका प्रकाशन 2007 में हुआ था। 2022 में इसे स्वराज प्रकाशन ने प्रकाशित किया है। डा. अम्बेडकर ने शिक्षा पर बहुत जोर दिया था। उसमें भी स्त्री शिक्षा को वे सामाजिक मापदंड का पैमाना मानते थे। ऐसे में, कावेरी ने अपने उपन्यास की नायिका रमिया को शिक्षा के दूत के रूप में प्रस्तुत किया है। आजादी से पूर्व दलितों के लिए शिक्षा के द्वारा बंद थे। ब्रिटिश हुकूमत में कहीं-कहीं उनके लिए दरवाजे खुले तो कहीं अतिशय अस्पृश्यता के कारण दलित बच्चे पढ़ने से वंचित हो गये। रमिया के स्वरूप के बारे में लेखिका लिखती हैं - 'रमिया के पहनावे से लगता था कि वह गरीब परिवार की लड़की है परन्तु उसकी सफाई और एवं रूप-रंग निराले थे। पतली नाक, बड़ी -बड़ी आंखें, गोल मटोल चेहरा और चुलबुल स्वभाव वाली वह लड़की पढ़ने में तीव्र बुद्धि वाली थी'1

स्कूल में बाबा साहब डा. अम्बेडकर को भी पानी पीने के लिए अछूतपन का दंश झेलना पड़ा था। और यही दंश उपन्यास की नायिका रमिया को भी झेलना पड़ा-

"श्यामली ने रमिया की ओर इशारा करते हुए कहा," देखती क्या है, दौड़कर बाल्टी ला। प्यास के मारे मरी जा रही हूँ।... उठाते ही एक गर्जन भरी डांट सुनायी पड़ी, अरे! तू कौन है? बाल्टी छू दी। बगुली वाला डंडा को गर्दन में फंसाकर टीकाधारी मास्टर ने उसे अपनी ओर खींचा और तड़ातड़ दो झापड़ जड़ दिये।"2

इस तरह के उत्पीड़न सतत होते रहे हैं। जूठन आत्मकथा के लेखक ओमप्रकाश वाल्मीकि को भी स्कूल में भेदभाव का सामना करना पड़ा था। आज के 21वीं सदी में भी भारत के जातिवादी परिवेश में यह उदाहरण देखने को मिलते हैं। राजस्थान में इंद्र मेघवाल की घटना ने देश को शर्मसार किया।स्कूल की पिटाई की वजह से बालिका रमिया के बाल मन पर आघात होता है और वह ज्वर से पीड़ित हो जाती है। रमिया के पिता इसका प्रतिकार करते हैं- "पाखंडी टीका चंदन लगाकर पुजारी बना है, दिल तो इनका काला है। गली-कुच्ची में गुजरेंगे तो साले बेटी बहू को घुरते जाएंगे और ऊपर से टपोरी करेंगे।"3 इससे यह संकेत मिलता है कि सवर्णों की बूरी नज़र दलित घरों की औरतों पर लगी रहती है। यह एक समस्या है, जिसका निवारण आज तक नहीं हो सका है। इस से जारकर्म और बलात्कार की विकराल समस्या का जन्म होता है। प्रखर चिन्तक डा. धर्मवीर अपने लेख 'दलितों का दर्शन क्या हो?' में लिखते हैं - "दलितों को दूसरी कौमों से संघर्ष में पहले अपने घरों को जरूर देखना है। आखिर, दलित जातियां दूसरी जातियों से मुक्ति किस - किस रूप में चाहती हैं? दूसरी जातियों के पुरुषों से अपनी बहू-बेटियों की रक्षा की बात बहुत जरूरी है।"4 पढाई के साथ रमिया और श्यामली की उम्र भी बढ़ती गई। हाईस्कूल गांव में न होने कारण लोग पढाई में बाधा डालने लगे और तंज कसने लगे कि - 'देखता हूँ लोग पढ़के मेमिन बनती हैं कि मेहतरानी"5 किन्तु अदम्य जिजीविषा से लैस रमिया ने शिक्षा को अपना हथियार बना लिया। जब ब्राह्मण लड़के श्यामली और रमिया के मितव्ययी लगाव को देखे तो उनकी भौंहे तन गई क्योंकि श्यामली कायस्थ थी और रमिया दलित। इसलिए उन लोगों ने दोनों को धमकाया। एक तरफ जहाँ बैजू, श्यामली, रमिया का वर्ग था तो वहीं दूसरी तरफ रत्न, शंकर और अनुज थे। श्यामली और बैजू के बीच पनप रहे अनुराग से ब्राह्मण लड़कों को हिंसक बना दिया। इस उक्त उपन्यास में श्यामली और रमिया मुख्य पात्र हैं और दोनों में गजब की तर्कसंगत चेतना का प्रतिस्फुटन हुआ है। बैजू जब रतन गिरोह से पीटकर विस्तर पर लेटा होता है उस समय श्यामली उसका हौसला बढ़ाती है। और बैजू के द्वारा खुद को नीच समझे जाने पर कहती है - "मैं कह देती हूँ मुझे किसी की परवाह नहीं। आवारों की तरह घुमते हैं। काला अच्छर भैंस बराबर हैं। ऊपर से पंडित कहलाने के अधिकारी हैं क्योंकि उनके बाप दादा पंडित कहलाते आए हैं।... मैं मूर्खों की लिखी किसी बात में विश्वास नहीं करती।... अरे पाखंडियों, एक दिन मानव में मानवता का जागरण होगा और गले में घंटियां बांधना, कान में रांगा पिघला कर भर देना, जीभ काट देना, बदला एक-एक कर चुकाया जाएगा। नहीं-नहीं तुम्हारे जैसे निशाचर ये लोग नहीं होंगे। मानवता का ज्ञान इन के पास है

जैसा मैं बैजू में अनुभव करती हूँ।"6 अंतर्जातीय विवाह और धर्मांतरण अम्बेडकरवादी चेतना का पर्याय है जिसे लेखिका अपने उपन्यास में प्रयोग करती हैं। श्यामली कायस्थ और बैजू दलित के बीच प्रेम का होना इसी ओर इंगित करता है।
गरीबी अभिशाप की तरह दलित जीवन को सालती रही किन्तु दलितों स्त्रियों ने मजबूरी का दामन नहीं थामा। वे स्वाभिमान के साथ मेहनत और ईमानदारी से अपना पेट पालते रहे। रमिया के बदहाल गरीबी का शिव नामक युवक लाभ उठाना चाहता है, जब रमिया उधार का साबुन उसके दुकान से लेने जाती है।

"रमिया साबुन फेंकते हुए नागिन की तरह फुंकार उठी," क्या यही तुम्हारा उपकार है? लाचारी के ऊपर व्यभिचार करते तुम्हें शर्म नहीं आई। अब से मेरी ओर नजर उठायी तो आंख फोड़ डालूंगी। मैं कल तक तुम्हारे रुपये वापस कर दूंगी और बिना साबुन लिए ही चली गई।"7 गरीबी का फायदा उठाकर दलितों स्त्रियों का यौन शोषण होते रहे हैं। लेकिन रमिया का आत्मस्वाभिमान गजब है। क्योंकि उस के अंदर शिक्षा की वजह से चेतना है। यही चेतना दलित स्त्री को स्वावलंबन की ओर ले जाती हैं जहाँ वे अपने समाज की समृद्धि में शामिल होती हैं। मोरल स्त्री की ताकत समाज को सशक्तीकरण नीव होती है। जिसे रमिया के चरित्र में देखा जा सकता है। शिव के छिछोरेपन के व्यवहार से उस के तन-बदन में आग लग जाती है। वह अपने मां से पैसे लेकर तुरंत देने आती है और शिव के मुंह में पांच रुपया फेंकते हुए कहती है - "किसी गरीब का इज्जत पांच रुपये के बराबर मत समझना।"8 हालांकि यही चेतना कमोवेश हर दलित स्त्री के अंदर विद्यमान है। वह चाहे घर में रहे या बाहर। श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथा" मेरा बचपन मेरे कंधों पर में एक संदर्भ आया है कि - जब स्त्री काम करने जाटों के खेतों में जाती हैं तो उनके लौंडे इन स्त्रियों पर बुरी नज़र रखते हैं और गन्ने के खेत में ले जाकर बलात्कार करने की सोचते हैं। लेकिन वहीं दलित स्त्रियां आपस में मशविरा करती हैं कि यदि वे इस तरह की हरकत करेंगे तो हाशिये से उन का गुप्तांग काट लेंगे। यह साहस ही आत्मबल काम करता है और वे लौंडे डर जाते हैं। तो सामाजिक स्थिति से किसी समाज की स्त्री की इज्जत कम नहीं हो जाती। मोरलिटी के मामले दलित समाज सबसे ऊंचा है। और दलित स्त्री-पुरुष संबंध मजबूत हैं। इस संदर्भ में लेखिका रजत रानी मीनू अपने लेख 'दलित स्त्री की मुक्ति दलित पुरुष के साथ होनी है' में लिखती हैं - "दलित स्त्री की समस्याएं एक नहीं अनेक हैं। उस की मुक्ति के मुद्दे, विमर्श और संघर्ष उस के परिवेश से जुड़े हुए हैं। वह भी अन्य स्त्रियों की तरह दूसरे दर्जे की प्राणी होकर दूसरे पायदान पर। वह यदि आगे नहीं जा सकती तो पुरुष के बराबर खड़ी होने के लिए संघर्षरत है। दूसरी ओर वर्ण और जाती से वह उसी प्रकार पीड़ित है जिस प्रकार उसके समाज का पुरुष। यहीं उसकी लड़ाई दलित पुरुष के साथ जुड़ जाती है। वह पुरुष की कमजोरी नहीं है, उस की ताकत बन कर अपना अस्तित्व बनाना चाहती है। दलित स्त्री का संघर्ष पुरुष से अलगाव का नहीं लगाव का है। हर क्षेत्र में समान सम्मान और भागीदरी का है। साथ ही समाज में दलित पुरुष के साथ दलित स्त्री भी समान शिक्षा, मीडिया, कला-संस्कृति और देश के तमाम विकास क्षेत्रों में अनुपस्थित है। यह दलित स्त्री के प्रति चिंता का विषय है।"9 यही सच है कि पुरे समाज के मुक्ति में ही दलित स्त्री की मुक्ति समाहित है। भारतीय स्त्री चिन्तन की बागडोर सही मायने में दलित चिन्तन के पास ही है। क्योंकि किसी भी डिस्कोर्स के लिए सैद्धांतिक आधार जरूरी होता है और वह स्वतंत्र चेतना के ऐतिहासिक भूमि से निर्मित होता है।

बहरहाल, उक्त उपन्यास की उप नायिका श्यामली कायस्थ होते हुए भी दलित चिन्तन की मनोभूमि से वाकिफ है और वह हिन्दू समाज के सामाजिक कुरीतियों प्रहार भर नहीं करती बल्कि हिन्दू घरों के अंदर के गंदगी से पर्दा भी उठाती है। जब गैर दलित सरस्वती की मां ताना कसते हुए कहती है - "अरे? श्यामली तू कायस्थ होकर अछूतों के घर क्यों जाती है?"10 इतना सुनते ही श्यामली तमतमा कर जवाब देती है -" क्यों चाची, क्या वे आदमी नहीं है? मैं तो सारे अच्छे गुण उन्हीं में पाती हूँ। हम लोग घर में कुकर्म करते हैं तो क्या इनसे छिपा है। मैं सच बात से डरती नहीं चाहे मुझे कोई कुछ कहे। मैं आपही से पूछती हूँ कि चाचा हैं पढ़े-लिखे स्कूल इन्सपेक्टर, तो इन के मन में क्या भाव है आपसे छिपा है, अगर उन के भाव अच्छे होते तो आप के मुह से ऐसी बात निकलती। नयी बहाली में सवर्णों की बेटी-बहू के साथ बिछौना गर्माते हैं। दूसरी ओर पढ़े - लिखे चरित्रवान को अछूत कह कर दुत्कारते हैं। हां और सुनिए, अपनी भावज को तो चाचा छोड़े नहीं यह बात पूरा गांव जानता है। मैं बच्ची थोड़े ही हूँ। ललन पंडित की बहन जो पढ़ी-लिखी है और छक्कू दादा की पौत्री अनपढ़ दोनों मुनेश्वर मांझी के साथ थी उन दिनों शोर हुआ था।... जिन का संकुचित विचार होता है वे हर बुरे काम में आगे रहते हैं।"11 इस तरह की प्रखर स्त्री चेतना ही इस उक्त उपन्यास की प्राण शक्ति। रमिया शिक्षा के प्रति जागरूक है। वह अपने समाज के बच्चों के लिए स्कूल खोलना चाहती है ताकि वे उनमे चेतना की अलख जगा सके। उसे अपने जीवन में अनेक संघर्ष करने पड़ते हैं। जब एम. ए. कर के इंटर कालेज में अध्यापिका बनती है तो वहां भी उसे मुश्किलों का सामना करना पड़ता है - "इस विद्यालय में काम का बंटवारा भी जाति विशेष पर किया जाता है। प्रोन्नति पाने के बाद भी सुबह की पाली में उन्हें रखा गया है, इसका खास कारण है एक अनुसूचित शिक्षिका को परेशान करना। मिस रमिया पीजीटी शिक्षिका है। सुबह पाली में एक मैडम दास हैं, वे सबसे सीनियर हैं फिर भी उन्हें इसका हक नहीं मिला। एक चमार जाति की शिक्षिका एक नंबर पर रहकर सुबह का कार्यभार संभाले यह सवर्णों की नजर में घोर पाप है। इसलिए एक ब्राह्मण शिक्षिका को जबरदस्ती उस स्थान पर रखा गया है।"12 तो इस स्तर के भेदभाव सार्वजनिक संस्थाओं में भी होता है। इस का पर्दाफाश कावेरी ने अपने उपन्यास में किया है। रमिया एक मंत्री के द्वारा अभद्र जाति सूचक गाली का सामना न्यायिक प्रक्रिया द्वारा करती है। और उसे सार्वजनिक क्षमा मांगने पर विवश करती है। इस उपन्यास की समीक्षा में रजतरानी मीनू स्पष्ट लिखती हैं - "अब तक के प्रकाशित उपन्यासों में पहला ऐसा उपन्यास है जिसकी रचनाकार दलित लेखिका है और दूसरी विशेषता, इसकी नायिका भी दलित लड़की मिस रमिया है जो अपने समाज के बच्चों की स्थिति को लेकर चिंतित है। इसलिए उन को एकत्र कर के पढाती है। बाद में यह

प्रयास स्कूल में तब्दील हो जाता है। इस तरह यह एक जिम्मेदार प्रतिबद्ध और संघर्षशील स्त्री की गाथा है। शिक्षा की मशाल लेकर रमिया निकली है जो उसे बाबा साहब डा. अम्बेडकर के विचारों के नजदीक खड़ा कर देती है।"13

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि यह उक्त उपन्यास प्रतिनिधि दलित उपन्यास है। क्योंकि इस कथा विन्यास की मनोभूमि अम्बेडकरवादी चेतना से लैस है। क्षेत्रीयता का सामाजिक परिवेश उपन्यास की कसावट को बरकार रखते हैं। कहीं - कहीं भाषा के स्तर पर खड़ी हिन्दी के शब्दों में त्रुटि दिखाई देता है। औपन्यासिक वैशिष्ट्य के साथ उक्त उपन्यास का सौंदर्यात्मक विशेषता औसत दर्जे की। पुरुषों में बैजू के अलावा सारे चरित्र नकारात्मक नजर आते हैं। श्यामली और रमिया की जोड़ी भारतीय स्त्री चेतना के प्रतीक के रूप में उपस्थित होती है।

संदर्भ

1. मिस रमिया, कावेरी, स्वराज प्रकाशन, 4648/1, 21, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली - 110002, प्रथम संस्करण :2022, पृष्ठ 7
2. वही, पृष्ठ 7
3. वही पृष्ठ 8
4. दलित चिन्तन का विकास :अभिशप्त चिन्तन से इतिहास चिन्तन की ओर, डा. धर्मवीर, वाणी प्रकाशन, 21-ए,दरियागंज, नयी दिल्ली - 110002, आवृत्ति संस्करण :2012, पृष्ठ 146
5. मिस रमिया, कावेरी, स्वराज प्रकाशन, 4648/1, 21, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली - 110002, प्रथम संस्करण :2022, पृष्ठ 11
6. वही, पृष्ठ 14
7. वही, पृष्ठ 21
8. वही, पृष्ठ 22
9. बहुरि नहिं आवना, संयुक्ताक : जनवरी, 2015- दिसंबर, 2015, संपादक. डा. दिनेश राम, जे-5,यमुना अपार्टमेंट होली चौक, देवली, नई दिल्ली - 110080, पृष्ठ 27
10-11. मिस रमिया, कावेरी, स्वराज प्रकाशन, 4648/1, 21, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली - 110002, प्रथम संस्करण :2022, पृष्ठ 26-27
12. वही, पृष्ठ 99
13. हिन्दी दलित कथा-साहित्य : अवधारण और विधाएँ, रजत रानी मीनू, अनामिका पब्लिशर्स प्रा. लि., अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली - 110002, पृष्ठ 85

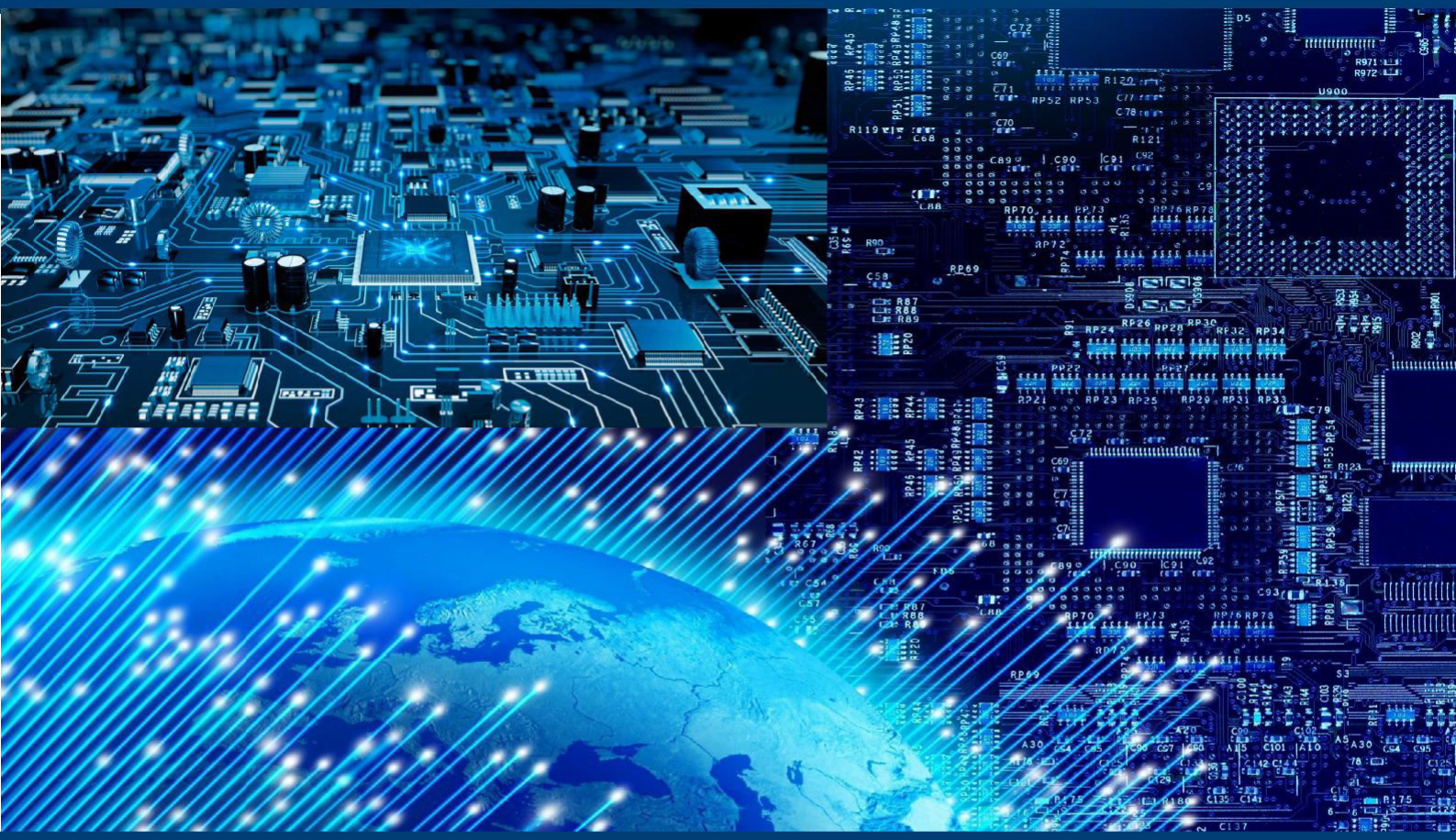

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |